श्री ।

काव्यसंग्रह ।

प्रथमभाग

षट्ऋतुवर्णन

जिसमें भक्त भयहारी कुंजविहारी श्री राधाकृष्ण-
जीके बिहारके ललित पद्य प्राचीन कवियोंके
रचे हुये रसिक जनोंके बिनोदार्थ और ना-
गरी मिडिल वर्नाक्यूलरके विद्यार्थियोको
अनुवादमे सहायता देनेके लिये ।

पंडित राधाकृष्णात्मज गोवर्द्धन चतुर्वेदी
पारनाग्राम जिला आगरा निवासी
ने संग्रह किया ।

वही
खेमराज श्रीकृष्णदासने
बम्बई
स्वकीय "श्रीवेङ्कटेश्वर" छापखानामे
छापकर प्रगटकिया ।
भाद्रपदसंवत् १९५१ सन् १८९४ ई